कहानी श्मशान और चांडाल की

काशी और महाश्मशान मणिकर्णिका के वर्णन को उपन्यास में अत्यंत शुद्ध हिंदी में प्रस्तुत किया गया है। हमारे धर्म, दर्शन, अध्यात्म और जीवन के रहस्यों से परिपूर्ण यह पुस्तक उच्च कोटि की हिंदी की अनूठी और संग्रहणीय है। यदि आप अच्छी हिंदी, अच्छी भाषा और अच्छे शब्दों से दो-चार होना चाहते हैं, तो यह पुस्तक उपयोगी है। सही शब्दों की दृष्टि से भी यह पुस्तक एक शब्दकोश है। यदि आपको अपनी भाषा सुधारनी है, तो इसे जरूर पढ़ें। समकालीन हिंदी लेखन में यह किताब सबसे अलग है। नवलेखन, नई कविता, आधुनिक लेखन और प्रगतिशील सोच के लेखक इस पुस्तक को पढ़कर नाक-भौं सिकोड़ेंगे।

■ पंकज पाठक

काशी मरणान्मुक्ति उपन्यास में एक चांडाल की कथा है। महा नामक यह चांडाल बचपन से ही जीवन के रहस्यों को खोजने चल पड़ता है और अंत में यह देह त्याग देता है एक संपूर्ण जीवन जीकर। उपन्यास में चांडाल की संवेदना, जिज्ञासा, कर्म, योग, प्रारब्ध और रहस्य का वर्णन है। काशी के महा का स्थान है महाश्मशान मणिकर्णिका, जहां यदि मुक्ति होती है, तो वह सीधे शिव के दर्शन कराती है।

पुस्तक के लेखकद्वय मनोज ठक्कर और रश्मि छाबड़ा ने 69 अध्यायों के इस उपन्यास के पहले अध्याय में लिखा भी है- 'जीव जो बने, जैसा बने, योग से बने, तो सत्य और भीषण संकट आने पर भी, जो काशी से विलग न होने दे, वही महायोग है। यदि जीव का मरण काशी में होता है, तो वह अमृत अर्थात् मुक्त हो जाता है और यही काशी मरणान्मुक्ति है।'

यह महाश्मशान काशी के फाकामस्त कस्बे में है। इसके बारे में पुस्तक के पहले अध्याय के चौथे पैरे में और स्पष्ट कहा गया है -'संसार के प्रत्येक जन्म में प्राप्त पुत्र, मित्र, संबंधी, अर्थ, काम और धर्म, सभी अन्यान्य तेज से प्रकाशित जुगनू के समदृश्य चमकते हैं, परंतु मोक्ष को प्रकाशित करने वाला दिव्य तेज तो काशीवास से ही संभव है। समस्त जन्मों के पुण्य कर्म का परिणाम ही काशीवास रूपी फल को प्रदान करता है।'

काशी और महाश्मशान मणिकर्णिका के वर्णन को उपन्यास में अत्यंत शुद्ध हिंदी में प्रस्तुत किया गया है। हमारे धर्म, दर्शन, अध्यात्म और जीवन के रहस्यों से परिपूर्ण यह पुस्तक उच्च कोटि की हिंदी की अनूठी और संग्रहणीय है। यदि आप अच्छी हिंदी, अच्छी भाषा और अच्छे शब्दों से दो-चार होना चाहते हैं, तो यह पुस्तक उपयोगी है। सही शब्दों की दृष्टि से भी यह पुस्तक एक शब्दकोश है। यदि आपको अपनी भाषा सुधारनी है, तो इसे जरूर पढ़ें।

समकालीन हिंदी लेखन में यह किताब सबसे अलग है। नवलेखन, नई कविता, आधुनिक लेखन और प्रगतिशील सोच के लेखक इस पुस्तक को पढ़कर नाक-भौं सिकोड़ेंगे और यहां तक कि कई तो इसे पढ़ने से भी बचेंगे। फिर भी भाषा की शुद्धता, उत्कृष्टता और उच्चता की दृष्टि से पुस्तक श्रेष्ठ है। नई कविता, आलोचना और गद्य में जहां एक नकली भाषा का चलन बढ़ गया है और जो कि आत्मकेंद्रित है, वहां काशी मरणान्मुक्ति जैसी किताब न केवल भाषा, बल्कि कथ्य और विषय की दृष्टि से भी मौलिक और विशिष्ट है। प्रायः ऐसी पुस्तकों के पाठक भी विशिष्ट ही होते हैं।

लेखकद्वय ने पुस्तक की भूमिका में लिखा है- 'कथा में जितना कथ्य है, उससे कई गुना अधिक अकथ्य। जहां शिव पुराण इस कथा काया की रीढ़ की हड्डी है, वहीं अन्य पुराण इसके अंग-प्रत्यंग। मुंशी प्रेमचंद की पत्रिका हंस के कुछ लेखों से मिली जानकारियों ने भी इसकी सुंदरता को बढ़ाया है। सत्य की सनातन रसधार की एक बूंद भी यदि पुस्तक के माध्यम से बाहर आ पाठक को आंदोलित करती है, तो यह हमारे जीवन को भी किसी अंश तक सार्थकता प्रदान करेगी।'

दोनों लेखकों ने पुस्तक के बारे में विस्तार से यह भी कहा है-'कहानी एक ही है और नायक भी एक। किंतु एक ही नायक के ये दो रूप- एक जगत् में ख्यात, तो दूसरा अनजाना अज्ञात। एक फूलों से उठती सुगंध, तो दूसरा चिता में जलते मुर्दों से उठती दुर्गंध। एक सूर्य से उजला दिन, तो दूसरा चंद्रविहीन अमावस्या की अंधेरी रात। एक विवाह के मंडप में सजी दुल्हन की चुनरी का रचयिता, तो दूसरा जीर्ण-शीर्ण मल-मूत्र से भरी मृत काया का दाहकर्ता। एक श्री विष्णुरूप रामानंद का शिष्य, तो दूसरा श्री शिवरूप गुरु का चेला।

कबीर को समझने वाले यदि महा को न समझें, तो परमात्म के रहस्य को नहीं समझ सकते। कबीर को चाहने वाले यदि महा को न चाहें तो मुक्ति कोसों दूर है...

...स्वयं जीवन जीकर तो सीख सकते हैं, दूसरों को सिखा भी सकते हैं और साथ ही मृत्यु से भिजवा भी कर सकते हैं, परंतु किसी को मृत्यु ऐसे नहीं सिखा सकते, जैसे जीना।

काशी मरणान्मुक्ति तो ऐसी स्थिति है जो किसी अज्ञात गुफा में छिपी बैठी है और किसी-किसी के लिए वह वहां से निकल स्वप्रकाश में अभिव्यक्त हो उठती है।'

यह पुस्तक हिंदी के श्रेष्ठ कथा साहित्य में दर्ज की जाएगी। आश्चर्य है कि जिस पुस्तक ने देश के विद्वानों के बीच अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज की है, उस पुस्तक की हिंदी के मठाधीश-आलोचकों ने कोई चर्चा नहीं की। कबीर की माला जपने वाले साहित्यकारों, खासकर प्रगतिशीलों को तो संभवतः इस पुस्तक के प्रकाशन की भी जानकारी नहीं होगी। यह भी चकित करने वाली बात है कि हिंदी के लेखकों और साहित्यकारों ने- जिनके पास यह पुस्तक सहज ही पहुंच गई थी, उन्होंने भी इसका साहित्यिक- संज्ञान नहीं लिया। जबकि पुस्तक की भाषा, आज के साहित्यकारों की भाषा से ज्यादा सहज और सटीक है।